ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-05
May-2020

आत्मजागरण, आत्मा और जगत् का ज्ञान

डॉ अमिता जैन

सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

शोध-सारांश

प्रत्येक प्राणी मुक्ति अथवा मोक्ष प्राप्ति की इच्छा रखता है। लेकिन यथार्थ ज्ञान के अभाव में लक्ष्य प्राप्ति नहीं कर पाता है। यथार्थ ज्ञान क्या है? आत्मा क्या है? आत्मा व जगत् का प्रज्ञान कैसे सम्भव है? ज्ञान कैसे प्राप्त हो? वास्तविक ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है? आदि रहस्यमयी ज्ञान को लेख में समझाने का प्रयास किया है। अज्ञानता दूर करने हेतु दृष्टान्तों, उदाहरणों आदि का विशेष सहयोग लेकर ज्ञान की सार्थकता को सिद्ध किया है। ज्ञान के माध्यम से आत्मजागरण, आत्मा व जगत् का प्रज्ञान प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द- आत्मजागरण, आत्मा, जगत्।

आत्मजागरण से ज्ञान

सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपने को ज्ञानी समझ बैठता है जबकि ज्ञान तो आत्मा को जगाने से होता है। शास्त्रों के पढ़ने, आदेशों के सुनने से जानकारी प्राप्त होती है, आत्मा का जागरण नहीं होता है। आत्मा का जागरण होने पर व्यक्ति लालच, मोह, माया, राग-द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, छीना-झपटी, हत्या, बलात्कार, बेईमानी, पाप आदि कार्य करने के लिए उत्साहित नहीं होता है। आत्मजागरण के अभाव में वह कर्त्ता **पन का भाव रखता है। मानता है कि संसार हमसे बना है। जब आत्म जागरण ही ज्ञान है तो मानना है कि संसार से हम बने हैं। आत्मजागरण में समर्पण भाव निहित होता है। समर्पण भाव से स्वभाव में विनम्रता आती है। शिक्षा में शिक्षक सैद्धान्तिक ज्ञान या जानकारी दे रहे हैं। अनुभव कराने पर आत्मजागृति को प्राप्त किया जा सकता है। आत्म जागृति, अज्ञान का मिटना, दुर्गुणों का नाश ही वास्तविक ज्ञान है। आत्म ज्ञान हो जाने के बाद इच्छाएं समाप्त हो जाती है। जो मन अन्दर से भिखारी है, वह बाहरी वस्तुओं को एकत्रित करता है, उसी में सुख ढूंढता है।**

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-05
May-2020

जैसे उजाला होने पर अंधकार ठहर नहीं सकता। अधंकार होने तक ही भूत का भय रहता है, दीपक जलते ही भूत का भय खत्म हो जाता है।

आत्म जागरण के अभाव में सीपी को चांदी समझने लग जाते हैं। आत्म जागरण होने पर सीपी में सीपी का ज्ञान, चांदी में चांदी का ज्ञान हेाता है। आत्म जागरण के अभाव में गलत प्रश्न के उत्तर को सही मान लेते हैं व सही उत्तर को गलत मान लेते हैं। विषय का अनुभवपरक ज्ञान होने पर संदेह मिट जाता है।

स्वयं पर विश्वास

अज्ञानता के कारण प्राणी का स्वयं पर विश्वास नहीं रहता है। वह भगवान् को ढूंढता है, देवी-देवताओं के पास अपनी इच्छा पूरी करने की कामना करता है। वह अपने विविध इष्ट के पास बिना मेहनत किये फल प्राप्त करने के लिए गिड़गिड़ाता है। शिक्षा में इस प्रकार के बढ़ते अज्ञान को निकालना होगा और स्वयं पर विश्वास बनाने का भाव जागृत करना होगा। जैसे कोरोना महामारी के उपचार के लिए स्वयं को एकान्तवास में जाना होता है, वैसे ही स्वयं की मेहनत, ईमानदारी, निष्ठा से ही सफलता को पाया जा सकता है।

आत्मज्ञान

शरीर, मन, बुद्धि, अभिमान आदि प्रकृतिजन्य है, जिनके अलग-अलग धर्म हैं। आत्मा चेतन स्वरूप है, जिसके गुण धर्म इससे अलग हैं। आत्मा दोष रहित, ज्ञानस्वरूप है जो इन सबको देखने वाली है। चित्त सदैव विविधता देखता है, उसकी देखने की शक्ति सीमाबद्ध है इसलिए इस जगत् में इसे विविधता का आभास होता है। जैसे मनुष्य, पक्षी, कीड़े-मकौड़े, पेड़-पौधे, जड़-चेतन, ठोस-तरल, गैस आदि का आत्मज्ञान होने पर सारी विविधताएं समाप्त हो जाती है और जान लेता है कि यह समस्त संसार उसी एक आत्मा का विविध रूप है। इन सबके अन्दर एक ही चेतन आत्मा का वास है। जिस प्रकार दूध से सैकड़ों प्रकार की मिठाईयाँ बनायी जा सकती है। दूध उन मिठाईयों का मूल तत्त्व है। उसी प्रकार आत्मा ही सबका मूल तत्त्व है। ज्ञान रहित व्यक्ति को चित्त की सीमाबद्धता के कारण विविधता रूप में ही वस्तुएं दिखाई देती हैं। सब भौतिक पदार्थों में आत्मा है, सब भूतों में आत्मा हैं। दोनों में कोई भिन्नता नहीं। जैसे पदार्थ ही ऊर्जा है और ऊर्जा ही पदार्थ है। वैज्ञानिक दोनों को अलग मानते हैं लेकिन अध्यात्म की दृष्टि से दोनों एक ही है। जैसे सागर से लहरें उठती हैं, लेकिन

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-05
May-2020

वे लहरें सागर में अलग नहीं है। सागर आत्मा है, लहरें जगत् है। लहरें उठती हैं, शांत होती है। लहरें अनित्य है। सागर नित्य है।

जगत् ज्ञान

लहरें जिस प्रकार से अनित्य उठती है, गिरती है, और नष्ट हो जाती है लेकिन सागर का उसके उठने, गिरने व नष्ट होने से कोई नुकसान नहीं होता है, उसी प्रकार जगत् अनित्य (हमेशा) रहने वाला नहीं है वह उत्पन्न होता है, नष्ट होता है। इस प्रकार उसके बनने बिगड़ने का कार्य लहरों की भांति सदैव चलता रहता है। लेकिन इसका आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि आत्मा सागर के समान नित्य रहने वाली है, जगत् के समस्त भोग-विलास, मिलना-बिछुड़ना, राग-द्वेष, अच्छे-बुरे, सुख-दुःख आदि अनुभूति लहरों के समान है जो उत्पन्न होती है, गिरती है और नष्ट हो जाती है। इसलिए मनुष्य की आत्मा सागर है और उसका शरीर लहर है। वह शरीर पानी के बुदबुदे की भांति कब समाप्त हो जायेगा। यह ज्ञात नहीं होता है। संसार में कष्ट हैं, हमें अपने को लहर समझना है, जब सागर के रूप में अपने को समझ लेंगे तो यह सारे कष्ट समाप्त हो जायेंगे। यह ज्ञान बुद्धि की सीमा के परे है, स्वयं की अनुभूति का विषय है। स्वयं पर विश्वास करने का अनुभव है।

आत्मा और जगत् का ज्ञान

आकाश में अनेक वायु की लहरें उठती हैं, चलती हैं और शांत हो जाती हैं, लेकिन आकाश पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। उसी प्रकार आत्म रूपी महासागर है, जिसमें मन की चिंता, शोक के कारण संसार रूपी लहरें उठती हैं और समाप्त हो जाती हैं, लेकिन उस आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे कुंए अनेक हैं लेकिन उन सबके अन्दर जल का स्रोत एक है। वैसे ही पदार्थ अनेक है, लेकिन उन सबका मूल आधार विद्युत एक ही है जो विविध तत्त्वों व पदों में विभाजित दिखाई देता है। इसी प्रकार आत्मा एक है, जिसके केन्द्र से यह शरीर-रूपी गतिमान है। शरीर के अन्दर स्थित आत्मा ही विश्वात्मा है, जिससे यह संसार रूपी चक्र चल रहा है। अतः आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म, जीव, संसार, जगत्, जड़, चेतन अलग-अलग नहीं हैं उसी की अभिव्यक्ति मात्र है। अतः चेतन रूपी आत्मा से यह संसार अलग नहीं है।

जैसे कंगना, बाजूबन्द और घुंघरू के आकार/रूप अलग-अलग है, नाम भी अलग-अलग है, उपयोग भी अलग-अलग है लेकिन सबको बनाने वाला तत्त्व धातु (स्वर्ण) है, वही सबका

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-05
May-2020

आधार होता है। नाम, रूप, उपयोग से धातु (स्वर्ण) की विविधता कैसे मानी जायेगी। जैसे समुद्र की तरंगों में सागर छिपा हुआ होता है, वैसे शरीर में आत्मा छिपी हुई है। यह सब कुछ आत्मा का फैलाव है।

आत्मा पूर्ण है, एक है, सब ब्रह्मा एक है तो आत्मा भी एक है, विविधता नहीं है। ईशोपनिषद कहता है, वह पूर्ण है, यह भी पूर्ण है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की उत्पत्ति होती है। पूर्ण का पूर्णत्व लेकर पूर्ण ही शेष रहता है। बीज पूर्ण है इसलिए सम्पूर्ण वृक्ष बनता है। यह संसार उस पूर्ण की अभिव्यक्ति होने से पूर्ण ही है। जैसे माता बच्चे को जन्म देती है तो बच्चा पूर्ण ही होता है किन्तु माता की पूर्णता में कोई कमी नहीं आती। आठ-दस बच्चे करके माता पूर्ण रहती है और बच्चा भी पूर्ण होता है, इसलिए कहा है कि पूर्ण से पूर्ण की उत्पत्ति होती है।

संसार आत्मा में बसा है। बिना आत्मा के संसार का कोई अस्तित्त्व नहीं है। जैसे चीनी में मिठास उसके बनने वाले रस से आता है, वैसे ही गुड़, मिश्री, मिठाई आदि में मिठास उसके रस में निहित होता है। चीनी, गुड़, मिश्री आदिमें रूप, रंग और गुण अलग-अलग दिखाई देते हैं, लेकिन सबका रस एक मिठास ही है। यह मिठास इन पदार्थ के कण-कण में व्याप्त होता है। वैसे ही संसार आत्म से बना हुआ है। यह आत्मा से अलग नहीं है। जैसे स्वर्ण (धातु) से अनेक प्रकार के आभूषण तैयार किये जाते हैं और बिगड़ जाते हैं। मिट्टी से भी अनेक बर्तन बनते हैं और बिगड़ते हैं। ऊर्जा से भी नए पदार्थ बनते हैं और बिगड़ते हैं। सागर से भी अनेक लहरें बनती हैं और नष्ट हो जाती है लेकिन इन सबका मूल तत्त्व सदैव वैसा ही रहता है। ये सभी परिवर्तित किये जाते है। इन्हें आकार दे दिया जाता है। पदार्थ विनाशी है (नित्य है)। यही पदार्थ विश्व है। ऊर्जा सदा रहने वाली है, शाश्वत है, स्वयंभू है। यह शरीर एक आकार है जो सत्त्वगुण, रजो गुण व तमोगुण से ग्रस्त है। यह शरीर जन्म लेता है, रहता है और मर जाता है। यह शरीर ही बचपन, युवा और वृद्ध होता है, लेकिन यह आत्मा हमेशा नित्य एवं शाश्वत है। यह आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है, न इसका विनाश होता है। यह शरीर साल तक रह सकता है या क्षणभर में भी नष्ट हो सकता है।

निष्कर्ष

आत्म जागरण का ज्ञान सैद्धान्तिक ज्ञान से नहीं होता है, यह तो अनुभवगम्य भावों में संचरित व क्रिया में लाने पर परिपुष्ट होता है। ज्ञान को आचरण में प्रयोग करने पर आत्म जागृति के रूप में अवलोकित किया जा सकता है। आत्म जागरण होने पर कषाय, लालसा,

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-05
May-2020

कामना, वासना, अभिमान आदि का विसर्जन हो जाता है। प्रज्ञान होने पर प्राणी स्वयं में विश्वास की भावना जागृत कर लेता है। आत्मा चेतन स्वरूप है, गुणधर्म के कारण वह अलग-अलग प्रतीत होती है, जगत् में आत्मा चित्त के अभाव के कारण से विविध रूपों में परिलक्षित होती है। शरीर, मन, बुद्धि, अभिमान आदि प्रकृति जन्य है। आत्मा सबका मूलाधार है। चित्त की सीमा बद्धता के कारण वह आत्मा विविध रूपों में दिखाई देती है जबकि आत्मा एक है। वही आत्मा परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म के रूप में है। आत्मा सदैव नित्य है और जगत् सदैव अनित्य है। आत्मा का ही यह सारा विस्तार है। भ्रम, संदेह अज्ञान के कारण हम उसे जानने में असमर्थ रहते हैं। यथार्थ ज्ञान प्राप्ति पर उसे सुगमता से जाना जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

1. **आचार्य मानिक**. 2019. **अष्टावक्र महागीता**, **साधना पब्लिकेशन्स**, K 4/4, **माडल टाऊन**. II, **दिल्ली।**
2. **गोयन्दका**, **हरिकृष्णदास**, **योग-दर्शन**. **गीता प्रेस**, **गौरखपुर।**
3. **श्रीमद्भगवद् गीता**, **गीता प्रेस**, **गौरखपुर।**